भगवत कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 7	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
शुक्रवार 26/7/96	जुलाई-1996	प्रति अंक : 5.00

ब्रह्मवाह

गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष

सभी बालकों और युवकों को गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष। तुमने जो मांगा वह तत्काल सिद्ध हो ही जाएगा, इसका विश्वास रखकर खुले दिल से प्रमाणिक रूप से प्रभु और संत की हाज़िरी मानकर वर्तना; अब तो मांगने का भी रहा नहीं। वर्तना और आनन्द किया करना व अपना कर्तव्य किया करना। सर्वोपरि कर्ता-हर्ता जब प्रभु को ही माने हैं, तो अब क्या बाकी रहा? सो मन है ही नहीं, सिर्फ पू. बापा का प्रकाश हैं हम। तो, उन्हें ही सभी निर्णय करने देकर, उनकी पसंदीदा जो सूझ आए, वह किया करना। अब तो शालाएँ खुल गई होंगी, तो पढ़ाई भी ठीक से करना और सुबह-शाम स्वरूपयोग व साप्ताहिक सत्संग सभा ! तो अखण्ड शान्ति, सुख और आनन्द रहा करेगा। दो मित्रों-एक बड़ों में से और एक हम उम्र में से किये या नहीं? यह दृढ़ करना। तो, सत्संग का आनन्द आएगा और जीव अतिशय बल को पा जाएगा व तकलीफ़ में प्रार्थना करनी, तो सभी हल निकलेंगे ही।

हमारा अहोभाग्य कि पू. बापा ने हमारा मूल अज्ञान टालकर कृपा करके जीते जी ही अक्षरधाम में रखा; सो पुरानी आदतें सब-सर्वथा छोड़कर अब गुरुजी की प्रसन्नता के लिए जीवन जीना। उलझन में रात को प्रार्थना करके तीव्र पुकार करनी, तो रास्ता जरूर निकलेगा-लेकिन हठाग्रह प्रभु के पास और बड़ों के पास पकड़ कर नहीं रखना... तो गुरुजी सब कुछ ठीक ही करेंगे...

युवकों, बहनों और संतों की सेवा करनी, तो देने वाले को प्रभु दुगुना दे ही देंगे। लेकिन आध्यात्मिक इंचीपट्टी अलग ही है, जो दिखाई नहीं देती, पर भला ही करते हैं, तो इकट्ठे होकर भजन करना। सुहृद्भाव सर्वत्र बढ़ाना और हर एक में एक सद्गुण होता ही है, सो, दत्तात्रय की दृष्टि - समझदारी दृढ़ करनी। तो अखंड अक्षरधाम का सुख सभी को मिलेगा... तो, गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष यह सभी को याद।

सभी को आनन्द कराना और सभी मिलजुल कर स्वधर्मयुक्त काम करें और खाली समय में माहात्म्ययुक्त भक्ति करें, तो दोनों पांव अखण्ड अक्षरधाम में ही रहेंगे... दूसरे किसी की क्रिया या स्वभाव की चिंता न करके प्रेम से मिलजुल कर काम करना। यहां के लोग अच्छे-बुरे की सलाह भी देते नहीं, हां-मित्र हो तो सहायता करे। मानो बिना कुछ सोचे-समझे सब ऐसे ही चल रहा हो, ऐसा लगता है। फिर भी खा पीकर सुखी हैं ! और हमें तो प्रभु का वरदान है, परन्तु आपसी हठ, मान, ईर्ष्या, मत्सर, असूया-जलन जाती नहीं। सो, अहोहोभाव से मिलजुल कर काम नहीं होता। ऐसा मूल अज्ञान-अहमरूपी बड़प्पन का भ्रम रहता है, जिससे प्रभु के आशीर्वाद काम करते नहीं। वर्ना निष्ठावाले को व्यवहार का दुःख तनिक भी हो ही नहीं सकता। सो, सभी को बल देना। आत्मबुद्धि वाले-मित्रभाव दृढ़ करना और निर्दोषबुद्धि वाले सर्वत्र-अल्पसंबंध वाले स्त्री, पुरुष और बच्चों में भी वच. का. 9, म. 63, अंत्य. 2 के मुताबिक दिव्यता रखकर प्रभु जो प्रेरणा करें, वैसे जुटकर-सुहृदभाव से काम करने की आदत डालोगे तो मूल अज्ञान बाधारूप नहीं होगा और महाशक्ति पैदा होगी। बाह्यवृत्ति सम्पूर्ण ही बंद करके, गुरुमुखी अंर्तदृष्टि पल-पल रखकर जो प्रेरणा हो, वह करना और अहोहोभाव टिका कर रखना-तो इस लोक व परलोक का सुख जरूर

समृद्धि से मिलेगा ही-यह अनुभव सिद्ध बात है। सभी को गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष।

महाराज का प्रगटपन चार प्रकार से पक्का समझ लेना; तब ही एकांतिक का प्रसंग किया कहलाए। वह तो खूब किया, फिर भी वैसी प्राप्ति होती क्यों नहीं दिखाई दी-क्यों लगी नहीं? वजह यह है कि-'सर्वोपरि रूप से प्रगटपन' मानने में ही कहीं कोई सत्ता का या गुण का या मान्यता का प्रभाव पड़ गया हो और अंतराय बाधारूप बनता हो व अल्प सम्बन्ध वाले दिव्य माने नहीं जाते, तो दिखाई तो कहां से दें? सो, अक्षरधाम के परमतत्व को प.पू. बापा व मुक्तों के रूप में मानवदेह में पहचाना, लेकिन उसके बाद-दोनों स्वरूप-जो हृदय में हैं वो ही बाहर-पहचानने पड़ते हैं और तब दोनों मूर्ति एक हो जाएगी-प्रकाश पड़ जाएगा या दिव्यभाव रहकर अखण्ड अक्षरधाम ही माना जाएगा व आनन्द वर्तेगा। दूरी और 'समझ गया' यह सब मन की कल्पना का अज्ञान है। तो, अब गुरुपूर्णिमा को दृढ़ संकल्प करना कि हम ब्रह्मस्वरूप ही हैं और महाराज अखंड साथ में हैं, हैं और हैं ही व उनका पल-पल का संचालन चलता है। सो, धीरज रखकर आगे-पीछे उन्हें देखने की राह देखनी, तो तत्काल दिखाई देंगे। तो, सभी लग पड़ना। नियमितरूप से स्वरूपयोग दो बार करना ही और ज्ञानगोष्ठि, सत्कर्म और रात को प्रार्थना-उसमें कभी नागा नहीं होने देना। तो अब बिल्कुल नया ही जन्म हुआ मानकर, प्रभुसत्ता का ही आधार लेकर मिलजुल कर कार्य करते जाना.... तो, यह नए सिरे की आदत डालना और उसके मुताबिक ही जीना शुरू कर देना। मूल अज्ञान टालने वाले गुरु मिले और गुरु तो ठीक थे व हैं, लेकिन शिष्य झेले नहीं तथा गफलत रखे, सो कसर रह जाती है।

सो, शूरवीर होकर मूर्ति धारकर ही सभी कार्यों का आरम्भ करना। अब ज्ञान बहुत हो गया; लेकिन उसे जीवन में छोटे-बड़े सभी प्रसंगों में उतार कर उस प्रकार जीना, तो आश्चर्यकारक घटनाएं बनती जायेंगी और हल न आए तो तीव्र प्रार्थना करना।

गुरु गुणातीत, प्रभु सहजानन्दजी और ये दोनों जिसमें आ गए, वह प्रत्यक्ष परम एकांतिक - उसे सर्वत्र - सर्वभाव से आगे रखकर, समझदारी से धीरज और सचेतन, सक्रिय, साक्षीभाव से सत्कर्म ये दो चीजों की लगनी लगानी, तो आध्यात्मिक धमाका होकर दिव्य चेतना में जरूर प्रवेश मिल जाएगा..... और तब तक किसी को भी उपदेश या समझाने में न पड़ें; सिर्फ सौंपी हुई सेवा ही करके भजन किया करेंगे, तो यह सब कुछ अपने आप सेट हो जाएगा। गुरुपूर्णिमा पर सभी के अन्तर में ज्योति प्रगटे और हृदय मंदिर में प्रभु बैठ जाएं व सदैव सुखी रहो ऐसी प्रार्थना!

-प.पू. काकाजी महाराज

अगस्त 1973

सही अर्थ में 'गुरुपूर्णिमा' कैसी मनानी-वह प.पू. काकाजी ने हमें अपनी इस कथावार्ता में समझाया है। तो आइये, हम सभी इसी कथावार्ता को आधार बनाकर हृदय के भाव से 'सच्चा गुरुपूजन' करके सच्ची गुरुपूर्णिमा मनायें।

✡✡✡✡✡

चातुर्मास (27 जुलाई '96 शनिवार से 21 नवम्बर '96 गुरुवार तक) के विशेष नियम....

हर साल की तरह चातुर्मास के पवित्र दिन नज़दीक आ रहे हैं.. पुरातन काल से ऋषि मुनियों द्वारा शास्त्रों में भी चातुर्मास की अत्यधिक महिमा कही है। भगवान स्वामिनारायण-श्रीजी महाराज ने भी चातुर्मास में विशेष नियम लेने का अपने आश्रितों से आग्रह रखा है। बारिश के इन दिनों में अधिक समय खाली मिलने पर भजन, स्वाध्याय से जीव को एक नई सूझ, विवेक, जाग्रतता, नई दिशा मिलती है। नियम जीवन को अनुशासित तो रखते ही हैं, साथ ही संयमी भी बनाते हैं। इससे भी अधिक प्रगट स्वरूप की आज्ञा से पाले गए नियम तो जीव को एक अनोखा बल, बुद्धि, प्रेरणा देते हैं, क्योंकि असल में सत्पुरुष की आज्ञा में ही तो आत्मसत्ता समाई है। इन नियमों का दिल की सच्चाई से पालन करने से साधक अपने आप को आध्यात्मिकता में जरूर एक कदम आगे बढ़ा हुआ महसूस करेगा। गृहस्थी संसार की मुश्किलों में रहते हुए भी तटस्थता, स्थिरता महसूस करेंगे। समस्याएं तो आयेंगी; पर फिर भी उनका बोझ नहीं लगेगा... संत के बल से हम आसानी से उन विपरीत संजोगों से निकल जाएंगे, स्वयं को हल्का अनुभव करेंगे। भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत पुरुषों ने हम सबको जागृत रखने, सुखी करने की एकमात्र भावना से कृपा करके चातुर्मास के विशेष नियम दिए हैं... तो आइये, चातुर्मास के इन विशेष नियमों को पालकर, प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हों व गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता प्राप्त कर लें.....

1. छोटी-मोटी हर एक दैनिक क्रियाएं-जैसे सुबह उठना, बोलना, स्नान करना, चाय-नाश्ता करना, भोजन करना, बाहर जाना-आना, सोना आदि का आरम्भ भगवत्सवरूप संत की समृति समेत एकाध मिनट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।

2. संत का ऐसा जोग दिया, उसके धन्यवाद स्वरूप रोज़ सुबह उठते ही हमें मिले प्रगट गुरुहरि की स्मृति करके 3 मिनट ध्यान में बैठकर इन्हें 'धन्यवाद-धन्यवाद' कहने का अभ्यास करना।

3. जिन्हें सुविधा हो वे-सुबह के भजन व शाम की धून व कथा में मंदिर/सत्संग केन्द्र में आयें। जो ना आ पायें वे अपने घर सुबह 15 मिनट धून व सायं आरती के बाद 15 मिनट धून अचूक करें।

4. मंदिर/सत्संग केन्द्र के जो करीब रहते हों या काम पर जाते हुए जिन्हें मंदिर/सत्संग केन्द्र रास्ते में आता हो व वे बहनें जो मंदिर आ पायें-प.पू. काकाजी के 'स्मृति स्थल' की या सत्संग केन्द्र में ठाकुर जी की रोज़ 31 प्रदक्षिणा करें और जो रोज़ ना आ पायें वे चातुर्मास दौरान मन्दिर/सत्संग केन्द्र में जब भी आयें तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।

5. मन्दिर/सत्संग केन्द्र से जो करीब रहते हों, वे सायं आरती के दर्शन करने आ जायें। जो मंदिर/सत्संग केन्द्र में ना आ पाते हों-वे घर पर परिवार में जो-जो हाज़िर हों सब मिलकर हर रोज सायं आरती करें।

6. सावन का पूरा महीना यानि 15 अगस्त, गुरुवार से 12 सप्टेम्बर, गुरुवार तक एक बारी भोजन लें।

7. 27 जुलाई-नियम की एकादशी, 5 सप्टेम्बर-जन्माष्टमी, 23 सप्टेम्बर-जलझीलनी एकादशी, 21 नवम्बर-कार्तिक शुक्ला एकादशी-इन चारों दिन अवश्य पक्का व्रत रखें।

8. हर शुक्ला नौमी, एकादशी व पूर्णिमा पर मंदिर दर्शन करने आ जायें।

9. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, स्वामी की बातें व पत्र संजीवनी जैसे अध्यात्म ग्रन्थों एवं 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज़ नियम से अध्ययन करें।

10. प.पू. काकाजी को 'सुहृदभाव' खूब पसन्द था, तो हम अपने साथी मुक्तों के साथ मिल-जुल कर रहें और हर प्रसंग पर गुणातीत स्वरूप को ही कर्ता-हर्ता मानकर उसका सहर्ष स्वीकार कर पायें। इस हेतु रोज़ सुबह पूजा में प्रार्थना रखें और सारे दिन में संत मान्य व्यवहार करने में कोई फर्क पड़ा हो, आपस में किसी से मिल-जुलकर नहीं रह पाएं हों, किसी बात पर किसी से चिड़ गये हों, किसी का कुछ चुभ गया हो-तो रात को सोते समय प्रगट स्वरूप के साथ उसे याद करके 10 मिनट-प्रायश्चितरूप प्रार्थना कर लें।

11. रोज सायं या रात्रि को आधा घण्टा Brisk (तेज) walking करें।

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

520 गोंडल के हरिजन ने कहा कि क्या पाप किये होंगे जो महाराज के दर्शन नहीं हुए? तब स्वामि ने उसे कहा कि पुण्य करे होंगे जो आज ये दर्शन हुए; वर्ना तो खूब पाप करते।

प्र-5,356

521 भोजने छाजने चिंता वृथा कुर्वन्ति वैष्णवाः। हमें तो माला फेरनी। रोटी तो भगवान देंगे और कइयों को दी है जो हम जानते नहीं और अब भी कईयों को दे रहे हैं।

प्र-5,357

522 ज़हर के लड्डू खाने में अच्छे लगेंगे, परन्तु थोड़ी देर बाद गला घुटने लगेगा। वैसा यह कारोबार है।

प्र-5,358

523 गृहस्थ आत्मा का ज्ञान जानता नहीं, लेकिन जिसे भगवान व बड़े साधु के साथ लगाव है, उसे कुछ करना रहा नहीं है। उस पर मध्य प्रकरण का 9वाँ तथा वरताल का 11वाँ वचनामृत विचारना। इन दोनों का एक अर्थ है।

प्र-5,360

524 कोटि-कोटि साधन करें, लेकिन यूं बातें करनी,उसके बराबर नहीं हो सकती। दूसरे से तो इतनी प्रवृत्ति में बातें हो ही नहीं सकती।

प्र-5,361

525 महिमा समझ में आती है, फिर भूल जाते हैं ! सो, सौ बार पढ़कर यदि समझें, तो फिर भूल नहीं पायेंगे। महाराज के समय लगाव बहुत था व अब ज्ञान अधिक है एवं खूब संस्कारी जीव आए हैं, सो साधु में तुरन्त लगाव हो जाता है।

प्र-5,362

✡✡✡

(ब्र. स्व. पपू. काकाजी महाराज के लाडले योगेश्वर पू. वशीभाई के जन्मदिन निमित्त पिछले दिनों दिल्ली से प.पू. गुरुजी एवं भक्तगण मुंबई गए थे। वहां पर प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोदभाई (पंजाब), प.भ. ऋषिभाई वगैरह ने हिन्दी भजन गाकर भक्तों को खूब लाभ दिया। वहां भक्तों को हिन्दी में ये भजन इतने अधिक पसंद आए कि इन भजनों को एक-एक करके 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका में देने का उन्होंने आग्रह किया है। इन भक्तों की यह भावना-इच्छा से भगवत् कृपा में अब ये भजन देना शुरू कर रहे हैं और ....जैसे कि सभी को ज्ञात है कि 'गुरुभक्ति यज्ञ' अर्थात प.पू. गुरुजी की षष्ठीपूर्ति नज़दीक आ रही है। सो, फिलहाल पत्रिका में प.पू. गुरुजी के प्रति हमारी भावना, अनुभव व्यक्त करते भजन एक-एक करके रखेंगे और आगे अन्य सभी भजन) लगातार दिया करेंगे, ताकि भक्तों को सभी भजनों का लाभ मिल सके। तो आइये, इन भजनों की शृंखला की शुरुआत 'गुरुभक्ति यज्ञ' की गूंज से करें.....)

गुरुभक्ति यज्ञ आया....

(राग – नहीं ये हो नहीं सकता...)

गुरुभक्ति यज्ञ आया, दिलों में हर्ष है छाया
अहोहो धन्य हो गए हम, गुरुजी का संबंध पाया
याहोम जीवन कर दें, अनमोल समय आया-2
अनमोल समय आया ऽऽ...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)

काकाजी के ही संकल्प से,
बना दिल्ली का ये समाज।
निमित्त तुझको बना करके,
चलाया रेती में जहाज।
महिमा सभी की तू गाता सदा,
तू... गाता सदा...
सर्वदेशीयता को रख,
स्वरूपों का बना प्यारा
अहोहो धन्य हो गए हम, गुरुजी का संबंध पाया।
याहोम...
अनमोल समय आया ऽऽ...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)

तेरा निरपेक्ष दिव्य प्रेम,
जाल माया के काटता।
रंग में अपने रंग के तू, दिव्यता में भिगो देता।
वृत्तियां पिघलाए ये तेरी नज़र,
तेरी... रहमो नज़र...
गुणातीत साधुता ऐसी,
संबंध से ब्रह्म प्रगटाया।
अहोहो धन्य हो गए गुरुजी का संबंध पाया
याहोम जीवन ...-2
अनमोल समय आया ऽऽ...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)

प्रार्थना है यही मेरी, अखंड मूर्ति रहे तेरी।
गुरुभक्ति अदा करके,
प्रसन्नता लूट लें तेरी।
भक्तों में तुझको निहारें सदा,
हम... निहारें सदा...
प्रभुमय होके सफल कर दें,
श्रम जो तूने है उठाया।
अहोहो धन्य हो गए...
याहोम जीवन ...
अनमोल ...
गुरुभक्ति...

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	27.7.96	शनिवार	– नियम की एकादशी, निर्जला व्रत, चातुर्मास प्रारम्भ
2. दि.	30.7.96	मंगलवार	– गुरुपूर्णिमा **(सुबह 6.30 से 8.15 अशोकविहार मंदिर में धून-भजन का कार्यक्रम)**
3. दि.	9.8.96	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
4. दि.	25.8.96	रविवार	– एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053